Ameere Ahle Sunnat Se Shaairi Ke
Baare Mein Suwal Jawab (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 235
Weekly Booklet : 235

अमीरे अहले सुन्नत से शाइरी के बारे में सुवाल जवाब

सफ़हात 21

- शाइरी के ख़्वाहिश मन्दों के लिये मदनी फूल 01
- क्या ग़ैरे आ़लिम ना'त नहीं लिख सकता ? 10
- किस किस का कलाम पढ़ना चाहिये ? 12
- शाइर के कलाम में तब्दीली करना कैसा ? 16

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला	: **अमीरे अहले सुन्नत से शाइरी के बारे में सुवाल जवाब**
पहली बार	: रजबुल मुरज्जब **1443** हि., फ़रवरी **2022** ई.
ता'दाद	: 000
नाशिर	: **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**अमीरे अहले सुन्नत से शाइरी के बारे में सुवाल जवाब**" मजलिसे **अल मदीनतुल इल्मिय्या** (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअए मक्तूब, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अहमदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" और मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत की मुख़्तलिफ़ क़िस्तों से लिया गया है।

अमीरे अहले सुन्नत से शाइरी के बारे में सुवाल जवाब

दुआए जा नशीने अमीरे अहले सुन्नत : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 19 सफ़्हात का रिसाला : **"शाइरी के बारे में सुवाल जवाब"** पढ़ या सुन ले उसे फ़ुज़ूलिय्यात से बचा कर अपने और अपने महबूब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहने वाली ज़बान अ़ता फ़रमा। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه फ़रमाते हैं : जब किसी मस्जिद के पास से गुज़रो तो रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ो।

(فضل الصّلاۃ علی النبی، ص70، رقم:80)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

शाइरी के ख़्वाहिश मन्दों के लिये मदनी फूल

सुवाल : कोई इस्लामी भाई हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام की शान में अश्आ़र लिखना चाहता है तो उसे किस चीज़ का ख़याल रखना चाहिये और किस त़रह़ के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करने चाहिएं ?

जवाब : अव्वल तो मश्वरा येही है कि अश्आ़र लिखने का शौक़ पैदा न करें क्यूं कि इल्मे उ़रूज़ बा क़ाइ़दा शाइरी का एक मुश्किल फ़न है नीज़ ह़म्द, ना'त, सह़ाबए किराम व अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُم और बुज़ुर्गाने दीन رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہِم की मन्क़बत के अश्आ़र लिखने के लिये क़ुरआनो ह़दीस पर नज़र होने के साथ साथ अल्फ़ाज़ का बहुत सारा ज़ख़ीरा, फ़न में महारत और बहुत सारा इ़ल्म चाहिये। मैं ने अ़वाम में से बहुत से लिखने वाले और वालियों के कलाम देखे हैं जिन में ऊट पटांग बातें होती हैं, न रदीफ़ का भान (ध्यान) होता है, न क़ाफ़िये का कुछ अता पता और न ही वज़्न सह़ीह़ होता है। इस के बर अ़क्स जो वाक़ेई शुअ़रा होते हैं वोह फ़न्ने उ़रूज़ का तो ख़याल रख लेते हैं लेकिन उन से भी शर्ई मुआ़मलात में गड़बड़ हो जाती है। लिहाज़ा आ़लिमे दीन माहिरे फ़न और अच्छा ख़ासा इ़ल्म रखने वाले शख़्स का शाइरी करना ही समझ आता है। बहर ह़ाल अगर कोई आ़म आदमी शाइरी करता है तो उसे चाहिये कि वोह अपने अश्आ़र को किसी माहिरे फ़न आ़लिमे दीन को चेक करवाए और उन की हिदायात पर अ़मल करे।

शाइरी का शौक़ या शोहरत की हवस !

याद रखिये ! शाइरी बहुत मश्ग़ूल करने वाला काम है, इस में बन्दा वाह वा से नहीं बच सकता है और हुब्बे जाह में जा पड़ता है, जिसे **अल्लाह** पाक बचाए वोही बच सकता है। मैं आप को इस की मिसाल देता हूं जैसे कोई शख़्स कलाम लिखता है तो वोह उस में अपना मक़्त़अ़ ज़रूर लिखेगा[1] अब अगर किसी ने उस शाइर का कलाम पढ़ा और उस में मक़्त़अ़ नहीं पढ़ा तो उस शाइर को क़ल्बी तौ़र पर रन्ज व सदमा होगा बल्कि अगर उस से

1... कलाम का सब से आख़िरी शे'र जिस में शाइर अपना तख़ल्लुस बयान करता है। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتۡ بَرَکَاتُہُمُ الۡعَالِیَہ)

बरदाश्त न हुवा तो वोह बोल भी देगा कि ''भई मक़्तअ़ तो पढ़ें'' ताकि पता चले कि येह कलाम मा बदौलत ने लिखा है ! ज़ाहिरन इस निय्यत में फ़साद मौजूद है, फिर मक़्तअ़ में नाम न डालना भी बहुत बड़ी आज़्माइश है कि अगर शाइर अपना नाम नहीं डालता तो उसे येह बात तंग करेगी कि लोगों को पता कैसे चलेगा कि येह कलाम मैं ने लिखा है। अलबत्ता इस बात का ख़याल ज़रूरी है कि मेरे इन मदनी फूलों को बुज़ुर्गों पर क़ियास न किया जाए जैसे सरकार आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने मक़्तअ़ में ''रज़ा'' लिखा इसी त़रह़ दीगर बुज़ुर्गों ने भी अपने कलामों में नाम डाले हैं। याद रखिये ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन सरापा इख़्लास होते थे हमारा इतना ज़र्फ़ कहां है !

बा'ज़ बुज़ुर्गों ने अपनी लिखी हुई किताबों पर इस ख़ौफ़ से अपना नाम नहीं लिखा कि कहीं क़ियामत के दिन येह न कह दिया जाए कि तुम ने किताब इस लिये लिखी थी ताकि तुम्हारा नाम मश्हूर हो जाए सो तुम्हारा नाम हो गया, तुम्हारी वाह वा भी हो गई अब तुम्हारे लिये कुछ नहीं है ! फिर ऐसों को औंधे मुंह जहन्नम में डाल दिया जाएगा। (मिरआतुल मनाजीह, 1/191) ह़दीस शरीफ़ में तीन अफ़राद की त़रफ़ इशारा है या'नी आ़लिम, सख़ी और राहे ख़ुदा में शहीद होने वाला कि इन तीनों से उन के आ'माल के बारे में पूछा जाएगा तो येह सब अपने अपने त़ौर पर **अल्लाह** पाक की ने'मतों का इक़्रार करेंगे और उस का शुक्र अदा करेंगे और बताएंगे कि हम ने येह ख़िदमत की, येह सख़ावत की, येह किया, वोह किया, फिर उन से कहा जाएगा कि तुम ने येह सब कुछ इस लिये किया ताकि तुम्हें आ़लिम, सख़ी और बहादुर कहा जाए वोह तो कह लिया गया फिर उन्हें जहन्नम में डाल दिया जाएगा। (مسلم، ص813، حدیث: 4923) ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान

رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं कि येह हर अ़मल के लिये है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/192 मफ़्हूमन) हर एक ग़ौर करे कि नाम के लिये अ़मल करने वालों के साथ क्या होगा ? वाक़ेई नाम की शोहरत में बड़ी लज़्ज़त होती है, येही वज्ह है कि बा'ज़ लोग अ़त़िय्यात और डोनेशन देते हैं तो उन की ख़्वाहिश होती है कि उन के बारे में टीवी और अख़्बार में ख़बर आनी चाहिये कि مَاشَآءَاللهُ मौसूफ़ ने इतना इतना चन्दा और डोनेशन दिया है। करने वाले येह सब करते हैं अ़लल ए'लान करते हैं। अब **अल्लाह** पाक बेहतर जानता है कि किस की क्या निय्यत है, हम किसी की निय्यत पर ह़म्ला नहीं कर सकते। लेकिन बा'ज़ अवक़ात वाज़ेह़ क़रीना होता है कि चन्दा देने वाला फ़ुलां शख़्स अपनी वाह वा चाहता है। लेकिन ख़याल रहे कि बा'ज़ अवक़ात क़रीना ग़लत़ साबित होता है। लिहाज़ा किसी को अपनी त़रफ़ से क़रीने निकालने की ज़रूरत नहीं है। हमें सिर्फ़ हुस्ने ज़न रखना चाहिये, इसी में आ़फ़ियत है।

ख़ुदा की रिज़ा की चाहत या दादो तह़्सीन की तमन्ना !

इसी त़रह़ मुसन्निफ़ भी ग़ौर करे, शाइ़र भी ग़ौर करे, मुबल्लिग़ भी ग़ौर करे, मदनी क़ाफ़िले का मुसाफ़िर भी ग़ौर करे। येह एक सांस में अपनी कारकर्दगी दे रहे होते हैं कोई कहता है मैं ने 12 माह सफ़र किया, कोई कहता है 25 माह सफ़र किया, तो कोई कहता है मैं तो हूं ही वक़्फ़े मदीना ! येह यक़ीनन सआ़दत की बात है मैं इन के बारे में येह नहीं कह रहा कि येह लोग रियाकार हैं लेकिन इन को अपने दिल पर ग़ौर कर लेना चाहिये कि मैं येह क्यूं कह रहा हूं ? अगर इन की येह बात सुन कर किसी ने कह दिया कि "वाह भई आप ने तो बड़ी क़ुरबानी दी है, आप की क्या बात है", इसी त़रह़ मुबल्लिग़ का बयान सुन कर किसी ने कहा कि "आप तो वाक़ेई बहुत

अच्छा बयान करते हैं या किसी ने سُبْحٰنَ الله कह दिया'' इसी त़रह़ ना'त ख़्वां से ना'त सुन कर कह दिया कि ''वाह سُبْحٰنَ الله आप की कितनी प्यारी आवाज़ है'' या कह दिया कि ''आप ने कितनी प्यारी आवाज़ पाई है'' तो इन लोगों के दिल में क्या ख़याल पैदा होता है कहीं लोगों का इन के लिये ता'रीफ़ी जुम्ले कहना इन के लिये पगार (उजरत) की ह़ैसिय्यत तो नहीं रखता ? इसी त़रह़ क़िराअत करने वाले क़ारी साह़िबान भी ग़ौर करें कहीं उन्हों ने तज्वीद के सारे क़वाइ़द माईक पर तिलावत के लिये तो वक़्फ़ नहीं किये हुए ? जब येह अपनी नमाज़ें पढ़ते हैं उस में क़वाइ़दे तज्वीद का ख़याल रखते हैं ? कहीं येह सारे क़वाइ़द का लिह़ाज़ सिर्फ़ अ़वाम से दादो तह़सीन वुसूल करने और वाह वा सुनने के लिये तो नहीं करते ?

याद रखिये ! मेरी इन तमाम बातों का मत़लब हरगिज़ येह नहीं है कि अगर कोई क़ारी साह़िब अच्छी तिलावत करें तो उन को येह कहा जाए कि ''येह तो अ़वाम को दिखाने के लिये इस त़रह़ पढ़ रहे हैं'' या ''इन के दिल में इख़्लास नहीं है'' वग़ैरा । ज़ाहिर है किसी को भी इस त़रह़ बद गुमानी करने और दूसरे पर हुक्म लगाने की इजाज़त नहीं है । याद रखें ! **अल्लाह** पाक को सब पता है, हमें चाहिये कि हम ग़ौर करें कि हम क्यूं पढ़ रहे हैं ? क्यूं लिख रहे हैं ? क्यूं कर रहे हैं ? क्यूं कह रहे हैं ? क्यूं बयान कर रहे हैं ? क्यूं दर्स दे रहे हैं ? क्यूं मदनी क़ाफ़िले में सफ़र कर रहे हैं ? क्यूं अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत कर रहे हैं ? क्यूं ना'तें पढ़ रहे हैं ? क्यूं तिलावतें कर रहे हैं ? क्यूं क़िराअतें कर रहे हैं ? क्यूं तहज्जुद पढ़ रहे हैं ? क्यूं नेक आ'माल के रिसाले पर अ़मल कर रहे हैं ? ऐ काश ! हम वोही काम करें जिस में सवाब मिले और रब की रिज़ा ह़ासिल हो । **अल्लाह** करीम हमें इख़्लास नसीब करे और हुब्बे जाह से बचाए ।

गुमनाम बन्दों की शानो अ़ज़मत

हुब्बे जाह का मत़लब है अपनी इ़ज़्ज़तो शोहरत की ख़्वाहिश करना और येह चाहना कि मैं मश्हूर हो जाऊं, लोग मेरी इ़ज़्ज़त करें, मेरी ख़ूब वाह वा करें या इस निय्यत से अपने ख़ानदान की निस्बत बयान करना मसलन किसी ने अपने आप को सय्यिद कहा या अपने बारे में बताया कि मैं फ़ुलां पीर साहिब की औलाद हूं या फ़ुलां बुज़ुर्ग से मेरी निस्बत चली आ रही है, मैं येह हूं वोह हूं ताकि लोग मेरी इ़ज़्ज़त करें, मेरे हाथ चूमें और कहें "वाह भई مَاشَآءَاللّٰه आप उन के पोते हैं या उन के पड़पोते हैं या उन के बेटे हैं या कहें अरे वाह आप फ़ुलां हैं वाह भई।" अगर येह ख़ुद अपना तआ़रुफ़ न भी करवाए तब भी ख़्वाहिश होती है कि मेरा तआ़रुफ़ करवाया जाए कि मैं कौन हूं ? किस का रिश्तेदार हूं ? किस बड़ी शख़्सिय्यत के साथ मेरा तअ़ल्लुक़ है ? या मैं किस बड़ी शख़्सिय्यत के साथ होता हूं ? जी हां ! जो किसी शख़्सिय्यत के साथ होता है उस शख़्सिय्यत की वज्ह से भी उस की इ़ज़्ज़त या आव भगत की जाती है येह भी एक ख़त़रा है। देखा जाए तो हर मुआ़मले में रिस्क फ़ेक्टर मौजूद है। **अल्लाह** करीम हमारे ह़ाल पर रह़म फ़रमाए और उन गुमनाम बन्दों का सदक़ा मिले जिन के बारे में कहा गया कि उन को दरवाज़े से दूर कर दिया जाता है, उन को पूछा नहीं जाता है, बीमार होते हैं तो इ़यादत करने वाले नहीं होते, फ़ौत हो जाएं तो लोग जनाज़े में आने की ज़ह़मत नहीं करते हैं। ऐसे गुमनाम बन्दों की अह़ादीसे मुबारका में शानें बयान हुई हैं। ब ज़ाहिर गुमनाम को कोई नहीं जानता लेकिन उस के लिये रब का जानना काफ़ी है या'नी बन्दे जानें न जानें इस से उन को कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, रब तो जानता ही है उन के लिये येही काफ़ी है। **अल्लाह** पाक चाहता है तो अपने ऐसे गुमनाम बन्दों को शोहरत अ़त़ा फ़रमा

देता है येह उस की मरज़ी और मशिय्यत है। लिहाज़ा अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم, औलियाए किराम और उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की शोहरत के बारे में येह नहीं सोचना कि येह हस्तियां गुमनाम नहीं थीं तो इन को फ़ज़ाइल ह़ासिल नहीं होंगे! इन हस्तियों के अपने अपने मक़ामात हैं। शोहरत हम जैसे लोगों के लिये ख़त़रे का जाल है एक जगह से बचते हैं तो दूसरी जगह फंस जाते हैं और फिर ख़ुद साख़्ता मस्लह़तें तलाश कर के ख़ुद को मुत्मइन करते हैं कि मेरी येह निय्यत नहीं थी, मेरा वोह मक़्सद नहीं था या मेरी मुराद फ़ुलां चीज़ थी वग़ैरा वग़ैरा और बा'ज़ अवक़ात ख़ुद को बचाने या झेंप मिटाने के लिये झूट का सहारा भी ले लेते हैं और येह सब वबाल इसी शोहरत का होता है। **अल्लाह** करीम हम सब को सच्चा कर दे और हमेशा हमेशा के लिये हम से राज़ी हो जाए।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 110)

शाइरी का शौक़ रखना कैसा ?

सुवाल : मुझे शाइरी का बहुत शौक़ है बराए करम मेरी रहनुमाई फ़रमाइये।

जवाब : शाइरी का शौक़ अच्छा नहीं है।[1] मैं ने शुअ़रा के कलाम में कई जगह कुफ़्रिय्यात देखे हैं, कई नामवर शुअ़रा जिन्हें तारीख़ में बड़ी अहम्मिय्यत दी जाती है उन्हों ने भी ऐसी ख़त़ाएं की हैं कि उन के अश्आ़र पढ़ कर बन्दा

1... याद रहे कि अश्आ़र फ़ी नफ़्सिही बुरे नहीं क्यूं कि वोह एक कलाम है, अगर अश्आ़र अच्छे हैं तो वोह अच्छा कलाम है और बुरे अश्आ़र हैं तो वोह बुरा कलाम है, जैसा कि ह़ज़रते उ़र्वह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शे'र एक कलाम है, अच्छे अश्आ़र अच्छे कलाम की त़रह़ हैं और बुरे अश्आ़र बुरे कलाम की त़रह़ हैं।" (سنن الکبری للبیہقی،5/110،حدیث:9181) और ह़ज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : "बा'ज़ अश्आ़र अच्छे होते हैं और बा'ज़ बुरे होते हैं, अच्छे अश्आ़र को ले लो और बुरे अश्आ़र को छोड़ दो।" (الادب المفرد،ص235،حدیث:890) (तफ़्सीर सिरातुल जिनान, 7/173,174)

सर पकड़ ले कि कहीं **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में तौहीन आमेज़ कलिमात लिख दिये, कहीं जन्नत का मज़ाक़ उड़ाया तो कहीं फ़िरिश्तों के तक़द्दुस पर ह़म्ला किया। शायद इन्ही शाइ़रों के बारे में किसी ने कहा है :

जहन्नम को भर देंगे शाइ़र हमारे

क्यूं कि जिस ने ऐसे कुफ़्रिय्यात बके जिन पर इल्तिज़ामे कुफ़्र[1] का हुक्म लाज़िम आता है और बिग़ैर तौबा किये मर गया तो वोह मुरतद हुवा और हमेशा जहन्नम में रहेगा। आज कल हर कोई शाइ़र बनने लगा है, बहुत से ऐसे Dummy शाइ़र जिन्हें शे'र कहना ही नहीं आता उन के बारे में किसी शाइ़र ने एक शे'र कहा है :

शाइ़री आती नहीं पर शाइ़री करने लगे

शाइ़री चारा समझ कर सब गधे चरने लगे

शाइ़री कोई चारा नहीं, येह एक फ़न है, अगर आप को शाइ़री का फ़न नहीं आता और आप शाइ़री करने बैठ गए तो येह ऐसा है जैसे आप दरज़ी नहीं मगर कपड़ा सीने बैठ जाएं। शाइ़र के लिये ज़रूरी है कि वोह जिस ज़बान में कलाम लिखना चाहता है उस के पास उस ज़बान के अल्फ़ाज़

1... कुफ़्र की दो क़िस्में हैं : (1) लुज़ूमे कुफ़्र (2) इल्तिज़ामे कुफ़्र। लुज़ूमे कुफ़्र येह है कि जो बात कही वोह ऐ़ने कुफ़्र नहीं मगर कुफ़्र तक पहुंचाने वाली होती है और इल्तिज़ामे कुफ़्र येह है कि ज़रूरिय्याते दीन (वोह मसाइले दीन जिन को हर ख़ासो आ़म जानता हो उन) में से किसी चीज़ का वाज़ेह़ तौ़र पर ख़िलाफ़ करना, येह क़त्अ़न इज्माअ़न (या'नी क़त्ई तौ़र पर बिल इत्तिफ़ाक़) कुफ़्र है अगर्चे ख़िलाफ़ करने वाला कुफ़्र के नाम से चिड़ता और कमाले इस्लाम का दा'वा करता हो। (फ़तावा रज़विय्या, 15/431 मुलख़्ख़सन) मज़ीद मा'लूमात के लिये दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब "कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब" का मुत़ालआ़ कीजिये। (शो'बा फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा)

का बहुत बड़ा ज़ख़ीरा हो लेकिन इन लोगों को तो पूरी त़रह़ उर्दू भी नहीं आती और न ही इन्हें येह पता होता है कि ''रदीफ़'', ''क़ाफ़िया'' और ''बह़्र'' किस को बोलते हैं, येह लोग किसी गाने या ना'त शरीफ़ के वज़्न पर अश्आ़र लिख लेते होंगे या फिर कोई ख़ुश इल्ह़ान ना'त ख़्वां हो तो वोह तरन्नुम में अश्आ़र लिख लेता है और आवाज़ अच्छी हो तो तरन्नुम की वज्ह से बे वज़्न अश्आ़र भी खींच तान के पढ़ लेता है और शाइ़री न जानने वाले लोग उस के कलाम को पढ़ते चले जाते हैं ह़ालां कि उस में फ़न्ने शाइ़री की बहुत ग़लति़यां होती हैं लेकिन उन्हें बोले कौन ? अगर कोई बोल दे कि तुम्हारा कलाम अच्छा नहीं है तो फिर देखो कैसा तमाशा खड़ा होता है।

(मदनी मुज़ाकरा नम्बर 14)

ना'तिया शाइ़री करना कैसा ?

सुवाल : ना'तिया शाइ़री करना कैसा है ?

जवाब : सुन्नते सह़ाबा عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان है या'नी बा'ज़ सह़ाबए किराम मसलन ह़ज़रते ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ और ह़ज़रते ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ वग़ैरहुमा से ना'तिया अश्आ़र लिखना साबित है। ताहम येह ज़ेह्न में रहे कि ना'त शरीफ़ लिखना निहायत मुश्किल फ़न है, इस के लिये माहिरे फ़न आ़लिमे दीन होना चाहिये, वरना आ़लिम न होने की सूरत में रदीफ़, क़ाफ़िया और बह़्र (या'नी शे'र का वज़्न) वग़ैरा को निभाने के लिये ख़िलाफ़े शान अल्फ़ाज़ तरतीब पा जाने का ख़दशा रहता है। अ़वामुन्नास को शाइ़री का शौक़ चराना मुनासिब नहीं कि नस्र के मुक़ाबले में नज़्म में कुफ़्रिय्यात के सुदूर का ज़ियादा अन्देशा रहता है। अगर शर्ई़ अग़्लात़ से कलाम मह़फ़ूज़ रह भी गया तो फ़ुज़ूलिय्यात से बचने का ज़ेह्न बहुत कम लोगों का होता है। जी हां ! आज कल जिस त़रह़ आ़म गुफ़्तगू में फ़ुज़ूल अल्फ़ाज़ की

भरमार पाई जाती है इसी त़रह़ ''बयान'' और ''ना'तिया कलाम'' में भी होता है।

क्या ग़ैरे आ़लिम ना'त नहीं लिख सकता ?

सुवाल : क्या ग़ैरे आ़लिम ना'त शरीफ़ नहीं लिख सकता ? और उस की ना'त पढ़नी सुननी भी नहीं चाहिये ?

जवाब : जो उ़लमाए अहले सुन्नत का सोह़बत याफ़्ता हो, शरीअ़त के ज़रूरी अह़काम जानता हो और हर हर मिस्रअ़ की शर्ई तफ़्तीश किसी आ़लिम से करवा लिया करता हो उस के लिखने और उस का लिखा हुवा उ़लमा का तफ़्तीश शुदा कलाम पढ़ने में ह़रज नहीं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ग़ैरे आ़लिम के ना'तिया शाइरी करने के सख़्त ख़िलाफ़ थे।

सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इर्शादाते आ़लिया का ख़ुलासा येही है कि जाहिल ना'त गो शाइरों के कलाम बसा अवक़ात कुफ़्रिय्यात से भरपूर होते हैं लिहाज़ा ऐसे कलाम पढ़ने वालों को मह़फ़िले ना'त में बुलाना भी ना जाइज़, ऐसी ना'त ख़्वानी में किसी को भेजना भी ह़राम और ऐसे कलाम का सुनना भी गुनाह।

आ'ला ह़ज़रत दो के इलावा क़स्दन किसी का (उर्दू) कलाम न सुनते

सुवाल : आ'ला ह़ज़रत कौन कौन से शुअ़रा का ना'तिया कलाम सुनना पसन्द फ़रमाते थे ?

जवाब : ना'त गो शाइरों की अक्सरिय्यत अपने कलाम में चूंकि अह़कामे शरीअ़त का लिह़ाज़ नहीं करती इस वज्ह से आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه क़स्दन सिर्फ़ दो शुअ़राए किराम ﴿1﴾ ह़ज़रत मौलाना किफ़ायत अ़ली काफ़ी और ﴿2﴾

ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْهِمَا का कलाम समाअ़त फ़रमाते थे। मक्तबतुल मदीना की 561 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत'' सफ़ह़ा 225 पर है : एक साह़िब, (ह़ज़रत) शाह नियाज़ अह़मद साह़िब رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के उ़र्स में बरेली तशरीफ़ लाए थे। आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए, कुछ अश्आ़र ना'त शरीफ़ के सुनाने की दरख़्वास्त (या'नी ना'ते पाक पढ़ने की ख़्वाहिश ज़ाहिर) की। (आ'ला ह़ज़रत ने) इस्तिफ़्सार फ़रमाया : किस का कलाम ? उन्हों ने (कलाम लिखने वाले का नाम) बताया इस पर इर्शाद फ़रमाया : सिवा दो (शुअ़रा) के कलाम के किसी का कलाम मैं क़स्दन (या'नी इरादतन अपनी ख़्वाहिश से) नहीं सुनता, (फ़क़त़ इन दो या'नी) मौलाना (किफ़ायत अ़ली) काफ़ी और (मेरे भाई) ह़सन मियां मर्ह़ूम का कलाम (सुनता हूं)। सफ़ह़ा 227 पर मज़ीद फ़रमाते हैं : और ह़क़ीक़तन ना'त शरीफ़ लिखना निहायत मुश्किल है जिस को लोग आसान समझते हैं, इस में तल्वार की धार पर चलना है ! अगर बढ़ता है तो उलूहिय्यत में पहुंच जाता है और कमी करता है तो तन्क़ीस (या'नी तौहीन) होती है। अलबत्ता ह़म्द आसान है कि इस में रास्ता साफ़ है जितना चाहे बढ़ सकता है। ग़रज़ ह़म्द में एक जानिब अस्लन ह़द नहीं और ना'त शरीफ़ में दोनों जानिब सख़्त ह़दबन्दी है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 227)

ना'तिया शाइरी हर एक का काम नहीं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर किसी मह़फ़िल में ग़ैर शर्ई कलाम पढ़ा जा रहा हो तो जो मा'लूमात रखता हो उस पर वाजिब है कि इस्लाह़ करे जब कि येह ज़न्ने ग़ालिब हो कि ग़लती करने वाला मान जाएगा और अगर मानने की उम्मीद न हो तो फ़ौरन उठ जाए, अगर केसिट वग़ैरा

में ना जाइज़ अल्फ़ाज़ या मआ़नी वाला शे'र सुनें तो फ़ौरन टेप रेकॉर्डर बन्द कर दीजिये और आयिन्दा भी केसिट में उस शे'र को सुनने से परहेज़ कीजिये और मुम्किना सूरत में केसिट और ना'त ख़्वान व ना'त गो शाइर वग़ैरा की इस्लाह़ की तदबीर भी कीजिये।

किस किस का कलाम पढ़ना चाहिये ?

सुवाल : किस किस शाइर की लिखी हुई ना'तें पढ़ना सुनना चाहिये ?

जवाब : हर उस मुसल्मान की लिखी हुई ना'त शरीफ़ पढ़नी सुननी जाइज़ है जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो। अब चूंकि कलाम को शरीअ़त की कसोटी पर परख्ने की हर एक में सलाहिय्यत नहीं होती लिहाज़ा आ़फ़ियत इसी में है कि मुस्तनद उ़लमाए अहले सुन्नत का कलाम सुना जाए। उर्दू कलाम सुनने के लिये मश्वरतन "ना'ते रसूल" के सात हुरूफ़ की निस्बत से सात अस्माए गिरामी ह़ाज़िर हैं : ﴿1﴾ इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ﴿2﴾ उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ﴿3﴾ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत मद्दाहुल ह़बीब ह़ज़रत मौलाना जमीलुर्रह़मान रज़वी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ﴿4﴾ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ﴿5﴾ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ﴿6﴾ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ﴿7﴾ मश्हूर मुफ़स्सिर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه वग़ैरा।

सुवाल : क्या ग़ैरे आ़लिम शाइर का कलाम पढ़ने सुनने की भी कोई सूरत है ?

जवाब : अगर ग़ैरे आ़लिम शाइ़र का कलाम पढ़ना सुनना चाहें तो पहले किसी माहिरे फ़न सुन्नी आ़लिम से उस कलाम की तस्दीक़ करवा लीजिये । इस त़रह़ اِنْ شَآءَ اللّٰہ الْکَرِیْم ईमान की हिफ़ाज़त में मदद मिलेगी, वरना कहीं ऐसा न हो कि किसी कुफ़्रिय्या शे'र के मा'ना समझने के बा वुजूद उस की ताईद करते हुए झूमने और ना'रहाए दादो तह़सीन बुलन्द करने के सबब ईमान के लाले पड़ जाएं । ग़ैरे आ़लिम को ना'तिया शाइ़री से अव्वलन बचना ही चाहिये और इन अहम मसाइल के इ़ल्म से क़ब्ल अगर कुछ कलाम लिख भी लिया है तो जब तक अपने तमाम कलाम के हर हर शे'र की किसी फ़न्ने शे'री के माहिर आ़लिमे दीन से तफ़्तीश न करवा ले उस वक़्त तक पढ़ने और छापने से मुज्तनिब (दूर) रहे। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ चूंकि पाए के आ़लिमे दीन थे, आप के शे'र का हर मिस्रअ़ ऐन क़ुरआनो ह़दीस के मुत़ाबिक़ हुवा करता था लिहाज़ा बत़ौरे तह़दीसे ने'मत अपने मुबारक कलाम के बारे में एक रुबाई इर्शाद फ़रमाते हैं :

हूं अपने कलाम से निहायत मह़ज़ूज़ बे जा से है لِلّٰہِ الْحَمْد मह़फ़ूज़
क़ुरआन से मैं ने ना'त गोई सीखी या'नी रहे अह़कामे शरीअ़त मल्हूज़

(**ख़ुलासा :** मैं अपने कलाम से ख़ूब लुत़्फ़ अन्दोज़ हो रहा हूं क्यूं कि मुझ पर **अल्लाह** पाक का एह़सान है कि मेरा कलाम फ़ुज़ूल बातों से मह़फ़ूज़ है । اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! मैं ने क़ुरआने पाक से ना'त गोई सीखी है । मत़लब येह कि اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! मेरा कलाम शरीअ़त के ऐन मुत़ाबिक़ है ।)

सय्यिदी अह़मद रज़ा ने ख़ूब लिखा है कलाम
उन के सारे ना'तिया अश्आ़र पर लाखों सलाम

(कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 32-38)

ना'तिया अश्आ़र चेक करवाइये

सुवाल : उ़लमाए किराम से अपने ना'तिया अश्आ़र चेक करवाना क्यूं ज़रूरी है ?

जवाब : बा'ज़ अवक़ात शुअ़रा भी ऐसी वाहियात बातें करते हैं कि बस, ज़ाहिर है येह लोग दुन्यवी शाइ़र होते हैं इन को ना'त लिखने का शौक़ चढ़ता है या ह़म्द बयान करने की ख़्वाहिश होती है या बुज़ुर्गाने दीन की मन्क़बत लिखने की सूझती है तो कुछ का कुछ लिख डालते हैं। येह इन की फ़ील्ड नहीं है बल्कि उ़लमाए किराम का शो'बा है किसी भी ग़ैरे आ़लिम का काम नहीं है कि वोह ना'त या ह़म्द वग़ैरा लिखे। ज़ाहिर है इन शुअ़रा को न **अल्लाह** पाक से मुतअ़ल्लिक़ अ़क़ाइद की मा'लूमात होती है न नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के मक़ामो मर्तबे की पहचान, तो जब येह शाने मुस्त़फ़ा बयान करने जाते हैं तो इ़ल्म न होने की वज्ह से तौहीन कर बैठते हैं या مَعَاذَاللّٰه ना'त को उलूहिय्यत के मर्तबे में ले जाते हैं बल्कि कभी तो सरीह़ कुफ़्रिय्यात तक भी कह जाते हैं और अ़वाम उन के कलाम ना'त समझ कर पढ़ रहे होते हैं।

ग़ैरे आ़लिम शाइ़र ख़ुद को उ़लमाए किराम का मोह़ताज रखे वरना कुफ़्र में जा पड़ेगा और मा'लूम भी न होगा। शुअ़रा ह़ज़रात मुझे अपना मुख़ालिफ़ न समझें न मुझ से नाराज़ हों, न मेरा आप से मुक़ाबला है, न मैं किसी मुशाइ़रे में ह़िस्सा लेता हूं और न ही मैं ज़ियादा फ़न्ने शाइ़री जानता हूं, बस थोड़ा बहुत इ़ल्म है जिस से गुज़ारा हो जाता है, और कलाम लिखने के बा'द ह़त्तल इम्कान उसे चेक करवाता हूं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त़ : 51)

ना'त में लफ़्ज़ ''तू'' या ''तेरा'' कहना कैसा ?

सुवाल : सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये ना'त में ''तू'' या ''तेरा'' के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल करना बे अदबी है ?

जवाब : जी नहीं ! इस लिये कि ता'ज़ीम व तौहीन का दारो मदार उ़र्फ़ पर होता है और हमारे मुआ़शरे में ना'तिया कलाम में ऐसे अल्फ़ाज़ के इस्ति'माल को बे अदबी नहीं समझा जाता लिहाज़ा इस में ह़रज नहीं । ना'त लिखना एक फ़न है जिस में मुख़्तलिफ़ बह्रों के मख़्सूस अवज़ान पर अल्फ़ाज़ लाए जाते हैं जिस से कलाम में ह़ुस्न पैदा होने के साथ साथ उसे त़र्ज़ में पढ़ना भी आसान हो जाता है । येही वज्ह है कि किसी शाइ़र के लिखे हुए कलाम में तब्दीली बल्कि एक ह़र्फ़ का भी फ़र्क़ करने से न सिर्फ़ कलाम का सारा ह़ुस्न ख़त्म हो जाता बल्कि उसे किसी त़र्ज़ में पढ़ना भी दुश्वार हो जाता है लिहाज़ा अदब इसी में है कि सरकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में शरीअ़त के दाएरे में लिखे गए ना'तिया कलाम को मिन व अ़न (जैसा लिखा है वैसे ही) पढ़ कर उस के ह़ुस्न को बर क़रार रखा जाए जैसे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मश्हूरे ज़माना कलाम है :

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़्ह़ा तेरा नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 15)

बा'ज़ लोग इसे यूं पढ़ते हैं :

वाह क्या जूदो करम है शहे बत़्ह़ा आप का नहीं सुनता ही नहीं मांगने वाला आप का

इस त़रह़ सारे ना'तिया कलाम का ह़ुस्न ख़त्म कर देते हैं ह़ालां कि जिन्हों ने येह कलाम लिखा है उन का इ़श्क़े मुस्त़फ़ा और बारगाहे मुस्त़फ़ा का अदबो एह़तिराम अपने तो क्या बेगानों को भी मुसल्लम (तस्लीम शुदा) है । एक बार किसी अ़लाक़े में होने वाली मह़फ़िले ना'त में ऐक मश्हूरो

मा'रूफ़ आ़लिमे दीन तशरीफ़ फ़रमा थे, उन के सामने एक ना'त ख़्वां ने येही कलाम पढ़ना शुरूअ़ किया लेकिन अदब के ज़ो'म में "तेरा" के बजाए हर जगह "आप का" के अल्फ़ाज़ लगा कर सारे कलाम को बिगाड़ कर रख दिया, बिल आख़िर जब आ़लिम साहिब के सब्र का पैमाना लबरेज़ हुवा तो इर्शाद फ़रमाया : "आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه तुम से ज़ियादा अदब जानते थे लिहाज़ा जो लिखा है वोही पढ़ो।"

(फ़ैज़ाने मदनी मुज़ाकरा, क़िस्त : 32)

शाइर के कलाम में तब्दीली करना कैसा ?

सुवाल : कुछ शुअ़रा कलाम के आख़िर में अपने नाम के साथ आ़जिज़ी के लिये कुछ अल्फ़ाज़ लिखते हैं, क्या हम उन अल्फ़ाज़ को तब्दील कर सकते हैं ?

जवाब : बा'ज़ अवक़ात बुज़ुर्ग अपने लिये आ़जिज़ी के ऐसे अल्फ़ाज़ लाते हैं जिन्हें हम पढ़ नहीं सकते, मसलन आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का एक शे'र है : "कोई क्यूं पूछे तेरी बात रज़ा !" इस के बा'द अगले शे'र में आप ने अपने लिये जो आ़जिज़ी के अल्फ़ाज़ इस्ति'माल फ़रमाए वोह मैं अपनी ज़ात के लिये कहता हूं कि "कोई क्यूं पूछे तेरी बात अ़त्तार ! तुझ से कुत्ते हज़ार फिरते हैं।" आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने येह लफ़्ज़ अपने लिये आ़जिज़ी के त़ौर पर इस्ति'माल किया है। इस में मेरी अपनी सोच येह है कि येह लफ़्ज़ न कहा जाए, बल्कि यूं कहा जाए : तुझ से कित्ते हज़ार फिरते हैं, या तुझ से शैदा हज़ार फिरते हैं, या आ़शिक़ हज़ार फिरते हैं। या इस त़रह़ का कोई ऐसा लफ़्ज़ लाया जाए जो इस मक़ाम पर मौज़ूं हो और शे'र का वज़्न भी न टूटे। जब ना'त ख़्वां येह शे'र पढ़ें तो वज़ाह़त कर दें कि आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान

رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने यहां आ़जिज़ी के तौ़र पर अपने लिये येह लफ़्ज़ इस्ति'माल किया था, लेकिन मैं ने इस को तब्दील किया है।

आज कल के ना'त ख़्वानों को इतना बोलना आता नहीं है, अलबत्ता इतना बोल लेते हैं कि "दो दिन से थका हुवा हूं, 12 दिन का थका हुवा हूं, रोज़ मह़फ़िलें हैं, चार चार बज जाते हैं" वग़ैरा। जहां वज़ाह़त करनी होती है वहां शायद इन्हें सुझका भी नहीं पड़ता (या'नी ज़ेह्न में ही नहीं आता) कि वज़ाह़त कर दें। मैं यहां सब की बात नहीं कर रहा, बल्कि दिल जलाने के लिये एक बात कर रहा हूं कि जहां वज़ाह़त करनी है वहां नहीं करते। बा'ज़ अवक़ात ना'त ख़्वां अश्आ़र का ख़ुलासा कर रहे होते हैं, इस के लिये भी इ़ल्म होना चाहिये, ख़ुसूसन आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के कलाम की वज़ाह़त में ज़ियादा एह़तियात़ की ज़रूरत होती है, क्यूं कि इन के कलाम Difficult (या'नी मुश्किल) होते हैं। ह़दाइक़े बख़्शिश की शुरूह़ात लिखी हुई हैं। अगर कोई ना'त ख़्वां उ़लमा की लिखी हुई शुरूह़ात से वज़ाह़त याद कर के बयान करता है तो कोई ह़रज नहीं है।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 246)

क्या इस्लामी बहनें ना'त के सीग़ों को बदल सकती हैं ?

सुवाल : एक कलाम है : "मैं मदीने चला" अगर इस्लामी बहनें इस को "मैं मदीने चली" पढ़ेंगी तो क्या येह ग़लत़ होगा ?

जवाब : किसी शाइ़र का कलाम पढ़ना "ह़िकायत करना" कहलाता है। या'नी जैसा उस ने कहा हम ने वैसा बयान कर दिया। अब अगर इस्लामी बहनें "मैं मदीने चला" पढ़ेंगी तो अ़जीब लगेगा, इस लिये इन्हें "मैं मदीने चली" पढ़ना चाहिये, लेकिन इस कलाम में आगे भी मर्दाना अल्फ़ाज़ आ रहे हैं, येह कहां कहां तब्दीली करेंगी !! बहर ह़ाल "चला" को "चली"

करना ज़रूरी होगा। क्यूं कि मुअन्नस के लिये येही इस्ति'माल किया जाता है। अगर "चला" कहेंगी तो इस्लामी बहनें हंसेंगी और मज़ाक़ करेंगी। इस के इलावा बहुत से कलाम ऐसे भी हैं जिन में तब्दीली की ज़रूरत नहीं पड़ती तो वोह पढ़ सकती हैं और पढ़े भी जा रहे होते हैं। याद रहे! किसी शाइर के अश्आ़र अपने नाम पर चढ़ा लेना कि "येह मैं ने लिखे हैं" झूट और ख़ियानत है, येह बहुत मा'यूब समझा जाता है और इसे दीनी सर्क़ा या'नी इल्मी चोरी कहते हैं। अलबत्ता बा'ज़ अवक़ात ऐसा इत्तिफ़ाक़ भी होता है कि एक ही त़रह़ का मिस्रअ़ दो शाइरों ने लिखा होता है जिसे अदबी या'नी फ़न्नी ज़बान में "तवारुद" बोलते हैं।

(मल्फ़ूज़ाते अमीरे अहले सुन्नत, क़िस्त : 246)

अमीरे अहले सुन्नत के गुजराती कलाम

सुवाल : आप ने सब से पहले कौन सा कलाम लिखा था ?

जवाब : दर अस्ल मैं गुजराती मीडियम से पढ़ा हुवा हूं जिस का अब हमारे यहां इतना चलन नहीं है। गुजराती इतनी मज़्लूम हो चुकी है कि जो लोग ख़ुद कहते हैं कि हम गुजराती हैं जब मैं उन से गुजराती में बात करता हूं तो बा'ज़ अवक़ात उन्हें तअ़ज्जुब होता है क्यूं कि वोह बेचारे इस त़रह़ की गुजराती बोलते हैं जिस त़रह़ बा'ज़ लोग अ़जीबो ग़रीब उर्दू बोलते हैं। बहर ह़ाल जिस त़रह़ उर्दू है इसी त़रह़ गुजराती भी बा क़ाइदा एक ज़बान है और बहुत अच्छी ज़बान है। पहले मैं गुजराती के ना'तिया मुशाइ़रों में ह़िस्सा लेता था और ना'तिया या मन्क़बत के कलाम लिखता था। (इस मौक़अ़ पर ह़ाजी अ़ब्दुल ह़बीब अ़त़्तारी ने अ़र्ज़ की :) आप अपना कोई गुजराती शे'र तो सुनाएं। (अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने फ़रमाया :) मैं ने वोह अश्आ़र जम्अ़ नहीं किये क्यूं कि उस वक़्त मेरा जम्अ़ करने का ज़ेह्न नहीं

था। कभी कभी याद करता हूं तो कोई कोई शे'र याद आ जाता है। एक ना'त का मक़्तअ़ मुझे याद आ रहा है :

मांगियो छे इ़श्क़े नबी मांगी न दुन्या एणे

मुझ ने अ़त्तार समझदार नजर आवे छे

(या'नी नबी का इ़श्क़ मांगा दुन्या की दौलत नहीं मांगी। मुझे अ़त्तार समझदार नज़र आता है)

येह मेरा बहुत पुराना एह़सास था कि दुन्या की दौलत के बजाए आक़ा की मह़ब्बत की फ़रावानी नसीब हो जाए और इ़श्क़े रसूल का ज़ख़ीरा मिल जाए। (सिल्सिला : दिलों की राह़त, क़िस्त : 8)

फ़ेहरिस

शाइ़री के ख़्वाहिश मन्दों के लिये मदनी फूल.....1
शाइ़री का शौक़ या शोहरत की हवस !.....2
ख़ुदा की रिज़ा की चाहत या दादो तह़सीन की तमन्ना !.....4
गुमनाम बन्दों की शानो अ़ज़मत.....6
शाइ़री का शौक़ रखना कैसा ?.....7
ना'तिया शाइ़री करना कैसा ?.....9
क्या ग़ैरे आ़लिम ना'त नहीं लिख सकता ?.10
आ'ला ह़ज़रत दो के इ़लावा क़स्दन किसी का (उर्दू) कलाम न सुनते.....10
ना'तिया शाइ़री हर एक का काम नहीं..11
किस किस का कलाम पढ़ना चाहिये ?.....12
ना'तिया अश्आ़र चेक करवाइये.....14
ना'त में लफ़्ज़ "तू" या "तेरा" कहना कैसा ?.....15
शाइ़र के कलाम में तब्दीली करना कैसा ?.....16
क्या इस्लामी बहनें ना'त के सीग़ों को बदल सकती हैं ?.....17
अमीरे अहले सुन्नत और गुजराती शाइ़री.....18

फ़रमाने आख़िरी नबी ﷺ

शाइरों की कही हुई बातों में से सब से ज़ियादा सच्ची बात लबीद का येह कलिमा है :

اَلَا كُلُّ شَیْءٍ مَا خَلَا اللّٰهَ بَاطِلُ

(या 'नी ख़बरदार ! अल्लाह के सिवा हर शै फ़ना होने वाली है)

(بخاری، 570/2، حدیث: 3841)